

श्री श्री कालीकवचम्

भरैव्युवाच। कालीपूजा श्बुता नाथ भावाश्च वविधिः प्रभो। इदानीं
श्रौतुमच्छामि कवचं पूर्व्वसूचतिम्।। त्वमवे शरणं नाथ त्राहि मां
दुःखसङ्कटां।। भरैव उवाच। रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भरैवि प्राणवल्लभे।
श्रीजगन्मङ्गलं नाम कवचं मन्त्रवर्गिब्रह्म॥

पठति वा धारयति वा त्रैलोक्यं मोहयेत् क्षणात्। नारायणोऽपि
यद्धत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम्॥ योगेशं क्षोभमनयद यद्धत्वा च
रघुद्वहः। वरदुपतान जघान वै रावणादिनिशाचरान्॥

यस्य-प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यवर्जिणी प्रभुः॥ धनाधिपिः कुबरोऽपि
सुरशोऽभूच्छीपतिः। एवं हि सकला देवीः सर्व्वसन्दिग्धीश्वराः प्रिये।
श्रीजगन्मङ्गलस्यापि कवचस्य ऋषिः शिविः।

हन्दोऽनुष्टुप देवता च कालिका दक्षिणैरेति। जगतां मोहनो दुष्टनिग्रहे
भुक्तमित्यु॥ योषादिकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्ततिः। ओं शरिणे मे
कालिका पादु क्रींकारकौक्षरी परा। क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटेषु च
कालिका खडाधारिणी। हुं हुं पातु नतैरयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती नन॥
दक्षिणे कालिके पादु घ्राणयुग्मं महेश्वरी॥

क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हुं हुं पातु कपोलकम्। वदनं सकलं पातु
ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥ द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा।
खड्गानुगुधरा काली सर्व्वान्गमभितो वद। क्रीं हुं ह्रीं व्रक्षरी पातु
चामुण्डा हृदयं मम॥

एहं हुं ओ एं स्तनद्वयं क्रीं कट् स्वाहा ककुंस्थलम्। अष्टाक्षरी
महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका। क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं करौ पातु
षडक्षरी मन। क्रीं नाभिं मध्यदेशेषु च दक्षिणे कालिकेऽवतु॥

क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठस्त कालिका या दशाक्षरी। ह्रीं ह्रीं दक्षिणे
कालिके हुं ह्रीं पातु कटद्वयम्॥ काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा
पातुरयुग्मकम्। ओं ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी मम॥

কালী হুন্নামবদ্যিযেৎ চতুৰ্ভবর্গফলপ্রদা। ক্রীং হুং হ্রীং পাতু সা গুল
দক্ষণিৎ কালকিৎ বতু ॥ ক্রীং হুং হ্রীং স্বাহা পাতু চতুদশাক্ষরী মম ॥ খড়া
মুণ্ড ধরা কালী বরদা ভয়হারিণী। বদ্যিভাঃ সকলাভাঃ সা
সৰ্ভবাঙ্গনভতিহবত্ব। কালী কপালিনী কুল্লা কুরুকুল্লা বরিোধিনী।
বপ্ৰিচতিতা তথাগ্রোগ্নপ্রভা দীপ্তা ঘনত্বঃ ॥

লীলা ঘনা বলাকা চ মাত্রা মুদ্রা মতি চ মাম্ ॥ এতাং সৰ্ভবাঃ খড্গাধরা
মুণ্ডমালাবভিষতিঃ। রক্ষন্তু দগ্ধিক্ষি মাং ব্রাহ্মী নারায়ণী তথা।
মহেশ্বরী চ চামুণ্ডা কটোমারী চাপরাজতি। বারাহী নারসিংহী চ
সৰ্ভবশ্চামতিভূষণাঃ।

রক্ষন্তু সায়ুধৈর্দক্ষিষু বদিক্ষিষু মং যথা তথা। ইত্যবেং কথতিং দবিয়ং
কবচং পরমাদ্ভুতম্। শ্রীজগন্মঙ্গলং নাম মহামন্ত্রটৌঘবগ্ধিহম্।
ত্রলৈকোক্ষাকর্ষণং ব্রহ্মকবচং মম মুখোদতিম্। গুরুপূজাং বধিয়াথ গৃহীয়াং
“কবচং ততঃ।

কবচং করিঃ সর্দ্বাপি যাবজ্জীবঞ্চ বা পুনঃ। এতচ্ছুভাদ্ভবমাবৃত্তা
ত্রলৈকোক্ষবজিযী ভবৎ। ত্রলৈকোক্ষঃ ক্షোভয়ত্যরে কবচস্য প্রসাদতঃ।
মহাকব্ধিবনেমাসাং সৰ্ভবসদ্বিশ্বরো ভবৎ। পুষ্পাঞ্জলীন কালকিয়াটৈ
মূলনেবৈ পঠৎ সর্কৎ।

শতবর্ষ সহস্রাণাং পূজায়াঃ ফলমাপুয়াৎ ॥ ভুজ্জবে বলিখিত্তিঞ্চতৈৎ
স্বর্গস্থং ধারয়দে যদি শিখিয়াং দক্ষণিৎ বাহটৌ কণ্ঠে বা ধারয়দে যদি
ত্রলৈকোক্ষং মোহয়ৎ ক্রোধাৎ ত্রলৈকোক্ষং চূর্ণয়ৎ ক্ষণাৎ।

পুত্রবান্ বলবান্ শ্রীমান্ নানাবদ্যিযানধির্ভবৎ। ব্রহ্মাস্ত্রাদীনি
শস্ত্রাণি তদ্ গাত্ৰ স্পর্শনত ততঃ। নাশমাযান্তি যা নারী বন্ধুয়া বা
মৃতপুত্রিণী ॥ কণ্ঠে বা বামবাহটৌ বা কবচস্য চ ধারণাৎ। বহুপত্যা জীবৎসা
ভবত্যবে ন সংশয়।

ন দ্যেৎ পরশষিভেযো হাভক্তভেযো বশিষেতঃ। শষিষেভেযো
ভক্তযুক্তভেযশ্চান্যথা মৃত্যুমাপুয়াৎ ॥ স্পর্দধামুর্দধয় কমলা বাগ্দবৌ
তনমুখে বসৎ। পটৌত্রান্তং স্থরৈষ্যমাস্থায় নবিসত্যবে নশ্চিত্তিম্ ॥

ইদং কবচমজ্জ্ঞাত্বা যো জপৎ কালী দক্ষণিাম্। শতলক্ষং প্রজা হিতস্য
বদ্যি ন সধিয়াতি ॥ নশস্ত্রঘাতমাপ্নোতি সোহচরিত্তিমৃত্যুমাপুয়াৎ।

□ ইতি ভৈবতন্ত্রে ভৈবীভবৈব সংবাদে কালী কল্পে কালীকবচং সমাপ্তম্।

